कृष्ण कुमार निर्माण

--------1

कविताएँ

घर है,
घर में दीवारें हैं,
दीवारों में दरारें हैं,
और.....
गजब है कि---
उन्हीं दरारों में हम रहते हैं
एक ही....
घर परिवार के नाम पर
और.....
ऐसे ही चल रहा है बरसों से।।।

----------2

सवाल करोगे
तो मारे जाओगे
और.....
सवाल नहीं करोगे,,,,
तो भी मारे जाओगे
प्रश्न यह है कि.....
जब हर हाल में मरना ही है
तो.....
क्यों ना सवाल करके ही
मरा जाए,,,,
ताकि----
भावी पीढ़ी तुम्हें गद्दार तो ना कहे
और.....
सिर तुम्हारा भी ऊँचा रहे।

---------3

वह बोला कि-----
मैं कभी भी,
कहीं भी,,
कैसी भी स्तिथि में,,,
कुछ भी अच्छा या बुरा
नहीं बोलता,,,
क्योंकि.....
बोलने से होते हैं लोग नाराज.....
मैंने कहा उसे कि... .
फिर तो तुम जिंदा नहीं हो,,
क्योंकि जिंदा आदमी बोलते हैं....
चुप तो सिर्फ मरे हुए होते हैं।

-------4

रात बहुत तन्हा थी,,
थोड़ी सी परेशान भी,,,
मैंने झटके से पूछ लिया
कि-----
आखिर इतनी तन्हाई कैसे, काट लेती हो....
बिना आँसू बहाए...
रात फटाक से बोली,,,
सुबह होगी जरूर...
यकीनन होगी...
इसी इंतजार में
काट लेती हूँ मैं तन्हाई